

DPN 5666

Title: मृत्यु उत्पात लक्षण MR TYU UTPĀTA LAKṢAṆA

Run. No. 6357

Cat. No.

Micro. No.

Subject ~~विषय~~

Religion: Hindu / Bauddha

Miscellaneous

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 23 × 8.8

Folios 1-10

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

missing folios / मंगल चै 2, 3,
Chapt. / act

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus.:

Material: palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon:

श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमः श्री मृत्यु उत्पात लक्षण ॥ ॥ श्री देवुवाच ॥ ॥ उत्पात लक्षणं देव ...

कमलका कभीरवा
विनेसदलेक पीरवा
सला देभाया नलक रुवा २
रुलेस उगड रुभाया २
देलेक रुभाया नूपा नमक रुभाया २
रावेभाया नूभाया

३

॥ अथ भयनमः ॥ ॐ नमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ दयवाच ॥ ॥ उत्पन्नकथनं दत्तकथ
 ॥ ॥ अत्रिष्टमिष्टसंज्ञां दत्तकथनं दत्तकथनं ॥ १ ॥ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ दत्तकथनं
 ॥ ॥ अत्रिष्टमिष्टसंज्ञां दत्तकथनं दत्तकथनं ॥ १ ॥ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ दत्तकथनं
 ॥ ॥ अत्रिष्टमिष्टसंज्ञां दत्तकथनं दत्तकथनं ॥ १ ॥ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ दत्तकथनं
 ॥ ॥ अत्रिष्टमिष्टसंज्ञां दत्तकथनं दत्तकथनं ॥ १ ॥ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ दत्तकथनं

राधा संवत्सरा कापत्र ३
 लघुजललघुमस्तु मांसदिर्घाषिफ न नवार एते च सप्त वर्षा रथक्रम गृहपाति मत्रर्घा। मन्त्रि
 तिर्थत्वानं कलमार्चनं स्नानवलिदानं नागपूजा वृक्षमदमनचन्दनगुग्गुलुनकचन्दनदा
 नहिमध्यकर्पूरं लोचनं दयं ॥ १४ ॥ अथ कस्मान् पुष्येति फलं वर्षेण्यमस्त्वामि मत्रर्घा। मन्त्रि हस्तिदानं न
 ॥ १५ ॥ सूर्यगावा उदृष्टं वर्षमेकं न तत् ॥ मन्त्रितामपाउ १६ चतुर्ष्वं सूरिहिमध्यगर्हतिर्थक
 ॥ १७ ॥ पर्वण्येन अग्निहोत्रिकमान इति ॥ मन्त्रिग्राहमिदिनस्य पुष्येति राग्न
 मन्त्रि शक्रयान् ॥ १८ ॥ स्वर्ग्येन मितसि आणामंदृष्टेन गृह्यविधिं नदृष्टेन मत्रर्घा ॥ अथ

^{पूजिता सुतन विवर्धन}
 वेदीभनैवर्धमकेनस्वामिन्त्यः॥ अत्रि पूनरागद्वयनंपरिष्ठापययूता मींससहिशीसं॥२४॥
^{पञ्चसिपिगया}
 अकस्मान्गजादिरामश्रुध. मरिषन्ना द्वागस्युय दामयने स्वामिनासापिकथम. वर्षगुयेन
^{सीकसपे केव} ^{कु} ^{कमर} ^{दूत}
 ॥ अत्रिं अऊ दानपतिद्या सुवर्धू दक्षिष्ठा॥२५॥ अहि मयूउद्याननगदक नूऊ नऊउ ऊउ
 स्तानेपाफेन तडप पुरवर्षाहिमन्तू॥ अत्रिं रुद्र यात् नवयुद्ध पतिमाकल मर्चन वलिपदम
 देगपाल योनिनी वडक ग धपति नूचैना॥ वलिनेवद्यपे अत्रिं गनु रुद्र॥ खलपान १ अछुऊप
 नाका रुद्र कर्णट मकवरि इय र गाला काल अय लु. इ मलि वे ककन सवाति ठि रुला गिम

पूरुद्रयात्। प्रवम स्तानमृत्ति कांड द्युयउदक वलिंदापयय रुद्र सन गिलादिवीहि रुद्रक सर्षपद्र
 लापूर्वणिमूर्ख. गदनननं नासपाउपर १ तिसर्षू पतिद्या सुवर्धू सहिगं नक कर्णट नकादिग
 अत्रि काध्याय ४ पाठ नादि. स्वविधिदान सर्ष लुलवन पतिद्याहि नय वन्दुविम्व. कांसपाउ तिसर्ष
 सहिगं. सर्ष नासहि ति लो घ अ॥२६॥ अकस्मान्गजल साधिनन. स्वामिन्त्यायू ४ ऊसवृद्धि नन दाय
 शा अत्रि ऊल स्तान उगपाग उवनंग लाऊल जागं कला विपार्चनं. अतिथि ए १ सर्ष सुवर्धू दानं.
 नूनं पृगपायस पूजा नं॥२७॥ कृण्वी जावनापि न नूयव लु रुमिनेन नऊनन द्याद गमासा
^{प्रसागयु मवृत्त मवगावृताया॥}

तत्र स महा राग जीव संभवा मन्त्रिं दे उदान च। दे उपं वाप हान हि द्वा पूजा म्ना ॥ २९ ॥ का क ल पा द य म न
 ग फे न इ हि ना म न र्वा हा क न स हा रा गि क र्द्वयं ना ऊ पी ज णी वा रा ध न द्र य ४ मि त्र म र्क व' ह घा ट
 ना मा स पु र्य न पृ ष म र्क त य उ द म र्क ती र्म क र्क ॥ म नि नि म स म य व लि पु द नं प्रा ग ४ का स व लि
 ॥ ३० ॥ वृ ति का म ध्य का क न गृ ह क म न त्र ति त र्य मा स ष ज ल्प य ॥ व ड का क द्वा दि का या स ता कि
 नी म र्क त्वा का ल पू त्र ष उ वे ग प्रा चा दि शि गृ ह क म न पू त्र त्वा ४ क ॥ य दि त्र धु उ प ता व मा स म क न
 स्वा मि ना ग कि ला म स्त न गृ ह क म न त र्क ॥ कृ प का क प म न न त र्क मा सि क न व ध न पा
 का ख कि ना स त त्वा या ॥ उ चि त् का ष ड्म न य ॥

॥ न वा ध म का ष वि ३ ॥
 कि ४ व त्स न म क न ती उ न स म य का क न पू त्र न ॥ प्रा ड त य प वा स च ॥ गृ हा म् पू र्व गृ ह क म न ॥ क थ
 द दि ४ ध म र्क शा प शि म रु नि ४ उ र्क त री ग ४ ज्ञा ल य म र्क ॥ ने र्क म ध न द्र य वा य व रु नि ४
 म न क ल ग द्र य ॥ त्र ध क ल र्क उ र्क म र्क ॥ ग वा र्क क म न उ र्क क रि त का क त्वा ॥ म नि वि धि ४
 प्रा गं त्वा नं गृ ह क ल म र्च नं त्वा न व लि त्र धु उ स र्क क र्क ४ कृ ष ध ज्ञा उ द क व लि ने व द्वा णि ग ति
 ३० पू न ४ प णे ने व द्वा र का क ल गृ ह का ष उ द क व लि दा प य ना गृ ह क म न द ल्प न प्र क्ता ल
 य ४ प र्क ग च म्मा ध य ना पू पि ना नि उ ना मा ति उ म्मा ल क म्बु त्री गु तु त्री फि न ध दानं पु ति द्वा र्क म

एकपिछुद गमयापिछु ग्वनसर्षप अम कर्षट अंगुली ५ पुमानरु लपगाका अहिलारस
 उकाकस्यरु काक्षेन उदकवर्लि मृत्पुत्रावोहि सहिगं दानवा अत्र १११ नृत्तन ॥ दाययन ॥
 ३४ ॥ ऊदल जगन मनूष्यस्य गवापिवा महिषावाडिहि ज्ञायनात्स कलत्तामिन स्यानिमासपक्षे न
 ॥ गमनिं तिर्थ गत्वा इद्रया कलसपूजादान स्वा नरुत्तुय पुमानपुनिष्ठाहि त्रयत्राणि कादम
 ति १ धर्मकं शोडन ॥ ३८ ॥ ख प्रपूजा कोले ख प्रपनन स्वा मि मृत्पु १ मास दयाय नृत्तन ॥ ख
 प्रकपितन साक डलकपनन नृत्तनिशा गमनिं नि गवां ड ग्वा ३ ॥ वलिपुदान ४ पान ख प्रमोसत

हिमं पुनिष्ठाहि त्रय ॥ ३९ ॥ लोहसर्प पुव ग्वन वर्षमकन स्वा मि मृत्पु १ मासि दान कोसपाण्डु चपूरु
 चन्द्र विम्ब सहिगं हि त्रय पुनिष्ठा सहिगं शोडन ॥ ३९ ॥ मनूष्यस्य नन नात्रीर्ष मित्ररुत्तु अंग
 पाद पुनरुत्तु पाप न स्वा मि मृत्पु १ वर्ष वडु दृयन ॥ गमनिं मृत्पु अय विधिना इद्रया दान
 न कागपाण्डु रक्षा न पूरु चन्द्र विम्ब सहिगं मृत्पु काग र्क पुनिष्ठा सुवर्धु धर्म संगरु पूरु ख
 हाद्यपि १० ॥ हि त्रय दानं ॥ शोडन ॥ ३८ ॥ मन्दित्रवाग्रमवा अपूर्व पोत्रे वन वलादि गुरु पु
 वरुचान गिव र्षा स्वा मि मृत्पु १ गुरु कलमपूजा वलि गुरय पुदानं कृत्वा गिनी वडु कं दानं

[illegible]

मा लासान आदि कृ न यन वा
 त्याग ॥ ४१ ॥ मन्दित्र मा ला कृ सुर्म वा मूषिका रुत्र मन व धन पा प्रति वर्ष दयन ॥ मन्दित्र यथा ग कि
 दान द्विष्य प्रतिष्ठा सहिर्ग वलि पुदानं मांस सहिर्गं हो र्छं व ॥ ४२ ॥ यस्य गृहं द व डि छि ति ठि क कि
 टी की व रु ग ल पा फ न वर्ष म र्क व स्त्रामि ना ग ॥ मन्दि पुता भ ला दान अत्र दान कृ दानं सुवर्ष
 प्रतिष्ठा सह ॥ ४३ ॥ सप्य मृ ग दान सप्य डी वलि पा फ न मांस व तु दयन स्वामि मत्र र्छं ॥ मन्दि ४ स्वस्व व
 द रु जाग्र तेन रु द्र या न् मा ० ॥ स्वस्व वा अयं काल यत् गृह वा वा या ० का प्र यत् ॥ द्विष्य दानं
 गीत कर्पट ना सु पा यत् ३ न का न्ग पूर्ण सुवर्ष ग र्ह ४ दक्षिण सह हो र्छं व ॥ ४४ ॥ गृह न क वि
 व स हि द य वा

द वलस द म नू वा घ ग ण ष ७४

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४२ ॥ यस्तु गुरुद्वारा भुवि तां कल
 ठमीव कुण्डलपाफनवर्षमर्कवस्वामिनाम ॥ ४३ ॥ भक्तिपराभक्त्यादानं अन्नदानं द्रव्यदानं सुवर्ष
 पणित्यासह ॥ ४४ ॥ सप्रेमं गुरुद्वारा सप्रेमं जीवति पाफनमासवतुष्टयनस्वामिमन्त्रधी ॥ ४५ ॥ स्वस्व
 दज्जागर्भेन शङ्करान् ॥ ४६ ॥ स्वस्ववाच्यं कान्तयत्नं गुरुद्वारा वाचा ॥ ४७ ॥ क्षिप्रं दानं
 पीनकर्णं नानुपायं नृनकाभनगूर्ध्वं सुवर्षं गुरुद्वारा दानं सहासी च ॥ ४८ ॥ गुरुन कवि

ॐ ह्रीं क्लीं दक्षिणाय

0

15

10

5

0

Cms.

5

10

15

20

25

३५

३५

द्व वर्ष दाम्पत्यं तं गुरुपते प्रवृत्त नन कविष्ठि ह मोमृत्तिका मादाप १४४ नन वलि मक्ष कृत्वा अत्र
ह नदापयत्त उरिमृत्तिका पृथिव्या यक वलि दिगवलि ५ दान प्रोपौ नगुरुं कृत्वा पुति ह्म हि न स्यात्
॥ ४४ ॥ नन नारी अक्रसं पुति अपूर्व मने न इह नारी वलि ॥ वर्ष म क न वक्र न वध न स्यात् ॥ ४५ ॥
किं नृपुत्राय विधान न रुद्रयात् ॥ दान गात्र पात्र पुन हि न स्यात् सूर्य विष्णु हि न स्यात् स हि गं इन्द्र
स हि नं कृत्वा लि अ न्य दान वं पुति ह्म सूर्य ली य ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥
मिडं य पाफ न वध नं पृष्ठ न म गुरु तं ॥ उद न स पू उ न स्यात् ॥ वक्र ह्म ली न वि याग इ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥

१०